हर प्रसाद दास जैन महाविद्यालय, आरा के 75 वें
स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर महामहिम राज्यपाल
श्री रामनाथ कोविन्द का संबोधन
(दिनांक–21.01.2017 स्थान–आरा)

क्रान्ति वर्ष 1942 में स्थापित शाहाबाद प्रक्षेत्र के सारस्वत शिखर, बिहार का शैक्षिक गौरव हरप्रसाद दास जैन महाविद्यालय के 75वें स्थापना दिवस समारोह के इस अमृत महोत्सव में उपस्थित देवियों एवं सज्जनों, शिक्षक, शिक्षिकाओं, शिक्षकेत्तर कर्मचारीगण, मीडियाकर्मी, गणमान्य नागरिक और छात्र–छात्राओं!

सर्वप्रथम मैं उस दानवीर–कर्मवीर स्व० हरप्रसाद दास जैन को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता हूँ, जिन्होंने अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति शिक्षा और समाज सेवा के लिए दान कर दी। समाज में विरले मनुष्य ही ऐसे होते हैं, जो दूसरे के लिए, समाज के लिए धरा पर अवतरित होते हैं दानवीर हरप्रसाद दास जैन ऐसे ही महापुरुष थे। द्वितीय दानदाता स्व० महाराजा डुमराँव राम रणविजय बहादुर सिंह को भी मैं श्रद्धाञ्जलि देता हूँ, जिन्होंने महाविद्यालय के लिए जमीन दान में दी।

दरअसल, अन्न, जल एवं प्राकृतिक सौन्दर्य से पूरित तथा पौराणिक आख्यानों में वर्णित महाराजा भोज की पावन धरती, राजा मोरध्वज की धरती, भोजपुर जनपद की धरती शौर्य, स्वाभिमान, त्याग एवं बलिदान का पूँजीभूत रूप उपस्थापित करती है। वस्तुतः शाहाबाद प्रक्षेत्र की मिट्टी का तेज–ताप इतना ज्योतित एवं उर्जस्वित रहा है कि यहाँ की प्रतिभाएँ अंतरिक्ष से लेकर सम्पूर्ण वसुन्धरा पर परिव्याप्त होती रही हैं।

आध्यात्मिक–सांस्कृतिक चेतना के प्रयोगधर्मी अग्रनायक महर्षि विश्वामित्र की साधना भूमि यही रही है। उन्होंने ही वैदिक–ऋचा श्रृंखला के सारभूत महागायत्री मंत्र का साक्षात्कार किया था। समाज की जन्मना रूढ़ होती वर्ण व्यवस्था पर वज्र प्रहार किया था। राजसी वैभव त्यागकर अपनी घोर साधना के बल पर ब्रह्मर्षित्व साधा था और इसी धरती के दीन–हीन, साधना–विहीन अभिशप्तों और अभिवंचितों के लिए एक नवीन स्वर्ग की कल्पना को मूर्त्त रूप दिया था। भारतीय संस्कृति के उन्नायक मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम ने अपनी विजय गाथा इसी शाहाबाद की पुण्य भूमि से शुरू की थी। महर्षि विश्वामित्र के आशीर्वाद से ताड़का का वध करके अन्याय और अत्याचार के खिलाफ रणभेरी का हुंकार किया था। वैदिक संस्कृति चिन्तन एवं युगान्तकारी परिवर्तन लाने एवं अपने विचारों से मानवता को त्राण दिलाने वाले तीर्थंकर महावीर की यह धरती कर्म भूमि रही है। मसाढ़ का प्राचीन जैन मन्दिर तथा आरा 300 से ज्यादा जैन मन्दिर इसके जीवंत गवाह हैं।

अनादिकाल से यह इतिहास पुरुषों की जन्मभूमि और कर्मभूमि रही है। महान शासक वीर सपूत शेरशाह सूरी ने हुमायुँ को शिकस्त देने के पश्चात् दिल्ली के तख्त पर कब्जा कर शूरवीरता का अपना इतिहास रचा। भोजपुर (आरा) हमेशा से ही क्रांति का उद्‌गम रहा है। यह वही पुण्यभूमि है जहाँ भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की प्रथम चिनगारी फूटी थी। सन् 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में जगदीशपुर के अमर शहीद रणबांकुरे बाबू कुँवर सिंह ने 80 वर्ष की आयु में तलवार उठाई और निरकुंश अंग्रेज ऑफिसर ग्रान्ड ली और टेलर को

धूल चटाकर प्रसिद्ध आरा हाउस से प्रस्थान कर अपनी जागीर को मुक्त कराकर जगदीशपुर के किले पर आजादी का प्रथम परचम फहराया। अपने शौर्य और वीर-दर्प से प्रथम स्वतंत्रता-संग्राम में एक यशस्वी अध्याय जोड़ा। आज उनकी वीर गाथा किंवदन्तियों और लोक गीतों का लोकप्रिय विषय बन गयी है।

उसी परम्परा में देश की आजादी से पहले आजादी की लड़ाई लड़ने वाले और आजादी के बाद आजादी को अक्षुण्ण रखने वाले, 71 युद्ध के अपराजेय विजेता बाबू जगजीवन राम की जन्मभूमि भी यही है। वे सामाजिक समता के समर के अमर योद्धा थे। बापू ने भी उनके तपोनिष्ठ कृतित्व की मुक्त कंठ से सराहना की है। कवि कैलाश, पं० सदल मिश्र, राजा राधिका रमण प्रसाद सिंह, भिखारी ठाकुर, आचार्य शिवपूजन सहाय, विश्व प्रसिद्ध गणितज्ञ डॉ० बशिष्ठ नारायण सिंह आदि की पावन भूमि यही है। मैं श्रद्धाभाव से इस धरती को प्रणाम करता हूँ।

बहरहाल, मैं महसूस करता हूँ कि दानवीर हरप्रसाद दास जैन महान दानदाता तो थे ही, वे एक अच्छे चिन्तक और विचारक भी थे। जैसा कि मुझे ज्ञात हुआ है कि शैक्षिक क्रान्तिनायक महामना पं० मदन मोहन मालवीय जी की दृष्टि और विचार से गहरे प्रभावित थे। यह हम सभी जानते हैं कि पण्डितजी की सोच थी कि भारतीय रियाया जब तक से शिक्षित नहीं होगी, देश को आजादी नहीं मिल सकती। अतएव, उन्होंने बसन्त पञ्चमी 1916 को काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी की आधारशिला रखी, जिसमें महात्मा गाँधी, घनश्याम दास बिड़ला व अन्य शिक्षाविदों की अग्रणी भूमिका थी।

इसी घटना से प्रभावित होकर ठीक दो वर्षों के बाद हरप्रसाद दास जैन जी वसन्त पञ्चमी 1918 का एक उच्च विद्यालय की स्थापना करते हैं और एक महाविद्यालय खोलने की रूपरेखा तैयार कर जमीन और पैसा का इंतजाम कर श्री आदिनाथ ट्रस्ट की स्थापना करते हैं। दुर्भाग्य से असमय 17 दिसम्बर 1920 को उनकी मृत्यु हो जाती है, लेकिन ट्रस्ट के अधिकारियों ने 21 जनवरी 1942 की बसन्त पञ्चमी को महाविद्यालय की आधारशिला रही, जो अहर्निश शिक्षा की नित्य नई ऊच्चाइयों को छूता हुआ बिहार का क्षैक्षिक गौरव बन गया।

मुझे अत्यन्त खुशी है कि 75 वर्ष के अपने सारस्वत सफर में कॉलेज ने अनेक शिक्षाविदों, प्रशासकों, राजनयिकों, चिकित्सकों, अभियंताओं, अधिवक्ताओं और समाजसेवियों को देश-विदेश में अपनी सेवा-भावना के लिए प्रतिबद्ध बनाया, जो एक बहुत बड़ी उपलब्धि है।

अब वर्तमान में महाविद्यालय की अद्यतन स्थिति यह है कि यहाँ इन्टर से एम.ए. तक की पढ़ाई होती है। प्रायः सभी विषयों के स्नातकोत्तर विभाग हैं। इसके अलावे कई अन्य रोजगारोन्मुखी पाठ्यक्रमों की भी पढ़ाई होती है। कॉलेज को यू.जी.सी. से 12ठ के अन्तर्गत अनुदान भी मिलता है। लेकिन 75 वर्षों की लम्बी यात्रा में इतना ही पर्याप्त नहीं है। अभी इसे देश के अन्य मानक महाविद्यालयों के समकक्ष खड़ा करने की जरूरत है।

आज हम विज्ञान और तकनीकी विकास के अत्यंत गतिशील दौर से गुजर रहे हैं। संचार-क्रांति के फलस्वरूप आज दूरियाँ कम हो गयी हैं और सम्पूर्ण विश्व तेजी से एक 'विश्व ग्राम' में बदलता जा रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आई क्रांति से विभिन्न देशों के

बीच दूरी अब कोई समस्या नहीं रह गई है। आज इंटरनेट की सुविधा ने दुनिया के किसी भी देश के किसी भी पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तकों को, तकनीकी ज्ञान और चिकित्सकीय परामर्श को मिनटों में सर्वसुलभ बना दिया है। इसलिए आज विश्वविद्यालयों–महाविद्यालयों को अभिनव वैज्ञानिक शोधों और तकनीकी क्षेत्र में हासिल की जा चुकी नवीनतम उपलब्धियों के आदान–प्रदान के केन्द्र के रूप में विकसित होने की आवश्यकता है। विज्ञान और तकनीकी के तीव्रगति से हो रहे निरंतर विकास के कारण आज शिक्षा के क्षेत्र में – खासकर उच्च शिक्षा के क्षेत्र में लगातार बदलाव परिलक्षित हो रहे हैं। इन परिवर्त्तनों का उद्देश्य विद्यार्थियों को भविष्य की चुनौतियों का सामना करने की क्षमता प्रदान करता है। वे ज्ञानी बनें, कुशल उद्यमीं बनें, प्रतिभा सम्पन्न वैज्ञानिक बनें, अच्छे खिलाड़ी बनें, जिम्मेवार प्रशासक बनें, सफल राजनेता बनें, किन्तु साथ ही श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों से सम्पन्न मनुष्य भी बनें। आपका ध्यान प्रसिद्ध दार्शनिक, महान शिक्षाविद् एवं भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ० राधाकृष्णन के शिक्षा के उद्देश्य तथा शिक्षित व्यक्तियों के दायित्वों के बारे में अभिव्यक्त विचारों की ओर आकृष्ट करना चाहूँगा। डॉ० राधाकृष्णन की अपेक्षा थी कि ''विश्वविद्यालय अपने विद्यार्थियों में केवल सूचनाओं के ग्रहण करने की क्षमता ही नहीं, बल्कि वैज्ञानिक प्रवृत्तियों को विकसित करने का भी प्रयास करेंगे। छात्र–छात्राओं में सोच एवं शोध की ऐसी रुचि पैदा करेंगे, जिससे वे स्वतंत्र खोज, चिंतन तथा निष्पक्ष बौद्धिक निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए समर्थ बन सकें।'' मुझे विश्वास है कि महाविद्यालय इस दिशा में अपने स्तर से भरपूर प्रयास करेगा।

मैं चाहता हूँ कि महाविद्यालय अपने परम्परागत दायित्वों का निर्वहन करने के साथ ही अपने पोषक क्षेत्र के सर्वांगीण विकास की दिशा में भी कुछ सार्थक प्रयास करे। राष्ट्रीय सेवा योजना के माध्यम से गाँव-गाँव में साक्षरता, स्वच्छता, जन्म-प्रबंधन, पर्यावरण-सुरक्षा, सामाजिक सदभाव, जनसंख्या नियंत्रण और नारी सशक्तीकरण आदि के पक्ष में अनुकूल वातावरण-निर्माण का कार्य किया जा सकता है। जीवन को सुखी रखने के लिए आवश्यक है कि उपभोक्तावादी संस्कृति को त्यागते हुए, भारतीय सास्कृतिक मूल्यों के अनुसार हम सादगीपूर्ण जीवन-शैली को अपनाएँ। समतामूलक समाज-निर्माण के आदर्श को ध्यान में रखते हुए महात्मा गाँधी जी ने हमें 'अपरिग्रह' का संदेश दिया था। ऐसी जीवन-शैली अपनाने से न केवल पर्यावरण-सुरक्षा में मदद मिलेगी, बल्कि सतत् विकास की प्रक्रिया भी तेज होगी। मुझे प्रसन्नता होगी, अगर यह महाविद्यालय अपने विद्यार्थियों को इस दिशा में कार्य करने के लिए प्रेरित-प्रोत्साहित करे। पठन-पाठन के साथ-साथ राष्ट्र-निर्माण में सहायक इन कार्यों में रुचि लेने के कारण हमारे छात्र भविष्य में सजग और जिम्मेदार नागरिक बन सकेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है। हम सौभाग्यशाली हैं कि भारत में युवा शक्ति बड़ी संख्या में उपलब्ध हैं। हमारे युवक शिक्षित एवं चिंतनशील हैं। उन पर देश को आगे ले जाने की जिम्मेदारी है। हर पीढ़ी को नई-नई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। यहाँ उपस्थित छात्रों की पीढ़ी को वर्षों तक विकास लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रयास करने होंगे। मुझे विश्वास है कि युवा-शक्ति देश को नया आयामों की ओर अग्रसर करने में सहायक सिद्ध होगी। मेरी शुभकामनाएँ आपके साथ हैं।

और अन्त में महान दार्शनिक प्लेटो के अनुसार शिक्षा का मुख्य उद्देश्य मनुष्यों में सद्गुणों का विकास करना है। उन सद्गुणों के विकास के लिए कुछ आवश्यक शर्त्तें हैं, यथा- सच बोलना, अपने दायित्वों का उचित सम्पादन करना, माता-पिता एवं शिक्षक के लिये ईश्वरतुल्य भावना रखना एवं अतिथियों को ईश्वर के समकक्ष मानना। मुझे विश्वास है कि आप अपने जीवन में इन आदर्शों को अपनाने की कोशिश करेंगे। नए साल में अपने संकल्पों के साथ बिहार में शिक्षा के स्तर को ऊँचा उठायेंगे। दानवीर ने जिन संकल्पों और उद्देश्यों के लिए महाविद्यालय की स्थापना की वे उद्देश्य और आदर्श पूरे हों। मैं विश्वविद्यालय के कुलपति और प्रधानाचार्य तथा महाविद्यालय परिवार को धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने अथक परिश्रम से इस महाविद्यालय को राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति दिलाई है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इसकी ख्याति और बढ़ेगी तथा जनपद को इसका लाभ मिलेगा। इसी उम्मीद और विश्वास के साथ कहना चाहूँगा कि हमारे ज्ञान-विज्ञान के आलोक से इस क्षेत्र के छात्र-छात्राओं के जीवन को प्रभासित करने की दिशा में यह कॉलेज अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका इसी प्रकार सम्पूर्ण निष्ठा से निभाता रहेगा। आप सभी को बहुत-बहुत धन्यवाद। नए साल की हार्दिक शुभकामनाएँ एवम् बधाइयाँ!

जय हिन्द!!

***

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।